MINISTRY OF CULTURE GOVERNMENT OF INDIA
संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार
सत्यमेव जयते

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

'शास्त्र एवं प्रयोग'

कार्यक्रम के अन्तर्गत

'छाऊ' पारम्परिक शैली के आङ्गिक-अभिनय एवं युद्धकला पर आधारित कार्यशाला

दिनांक 16 जनवरी 2014
से 15 फरवरी 2014 तक

सहकार :

ज्ञान प्रवाह, वाराणसी

स्थान :

वेद विभाग,
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
एवं ज्ञान प्रवाह, वाराणसी

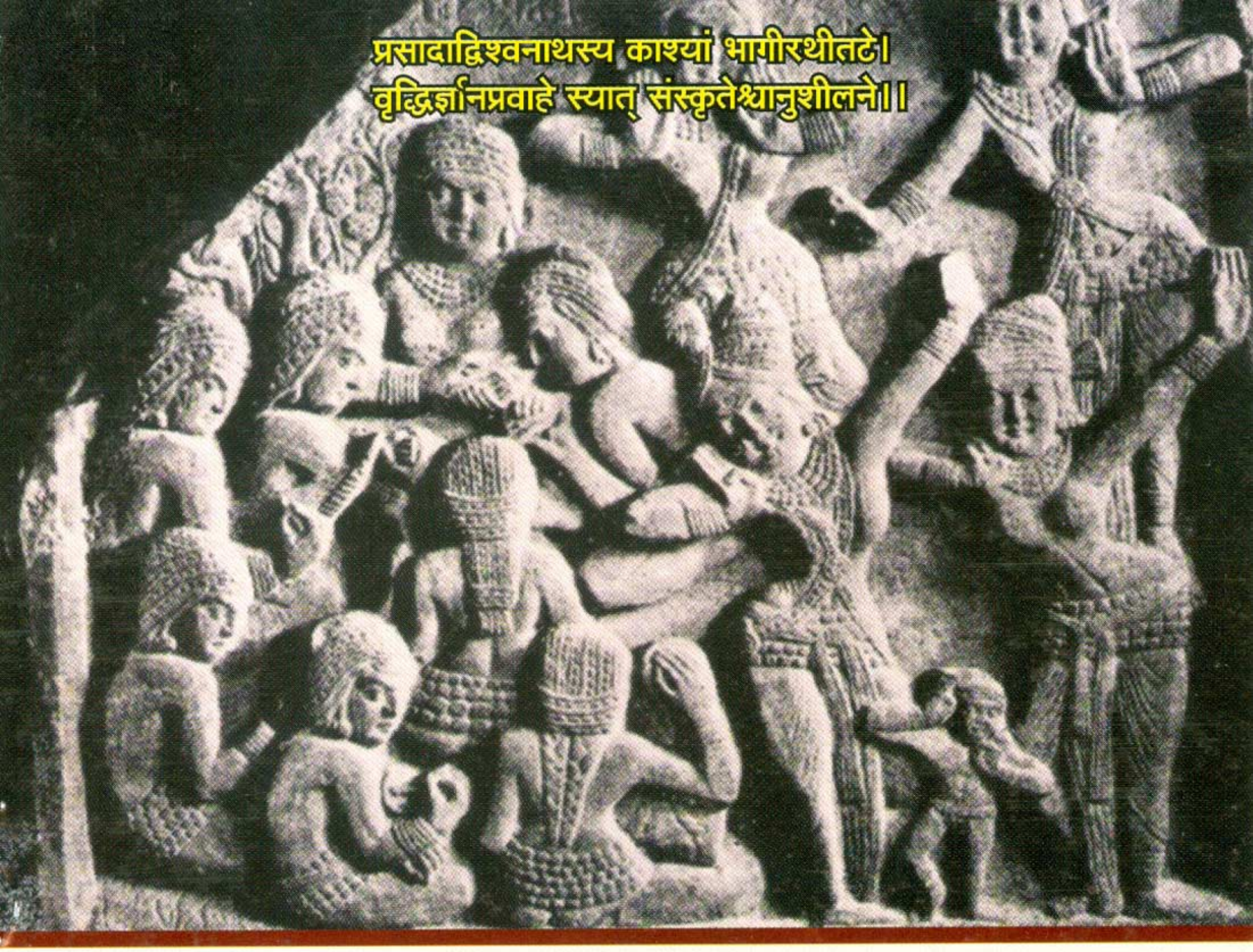

।।नाट्यं सतां पार्वणचाक्षुषक्रतुः।।

महाकवि भट्टनारायण

प्रणीत

वेणीसंहार

ज्ञान-प्रवाह, वाराणसी की प्रस्तुति

स्थान : नागरी नाटक मण्डली, वाराणसी

रविवार, 16 फरवरी, 2014

समय : सायं 6.00 बजे

(फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा, विक्रमसंवत् 2070)

सहकार

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

पूर्वक्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी

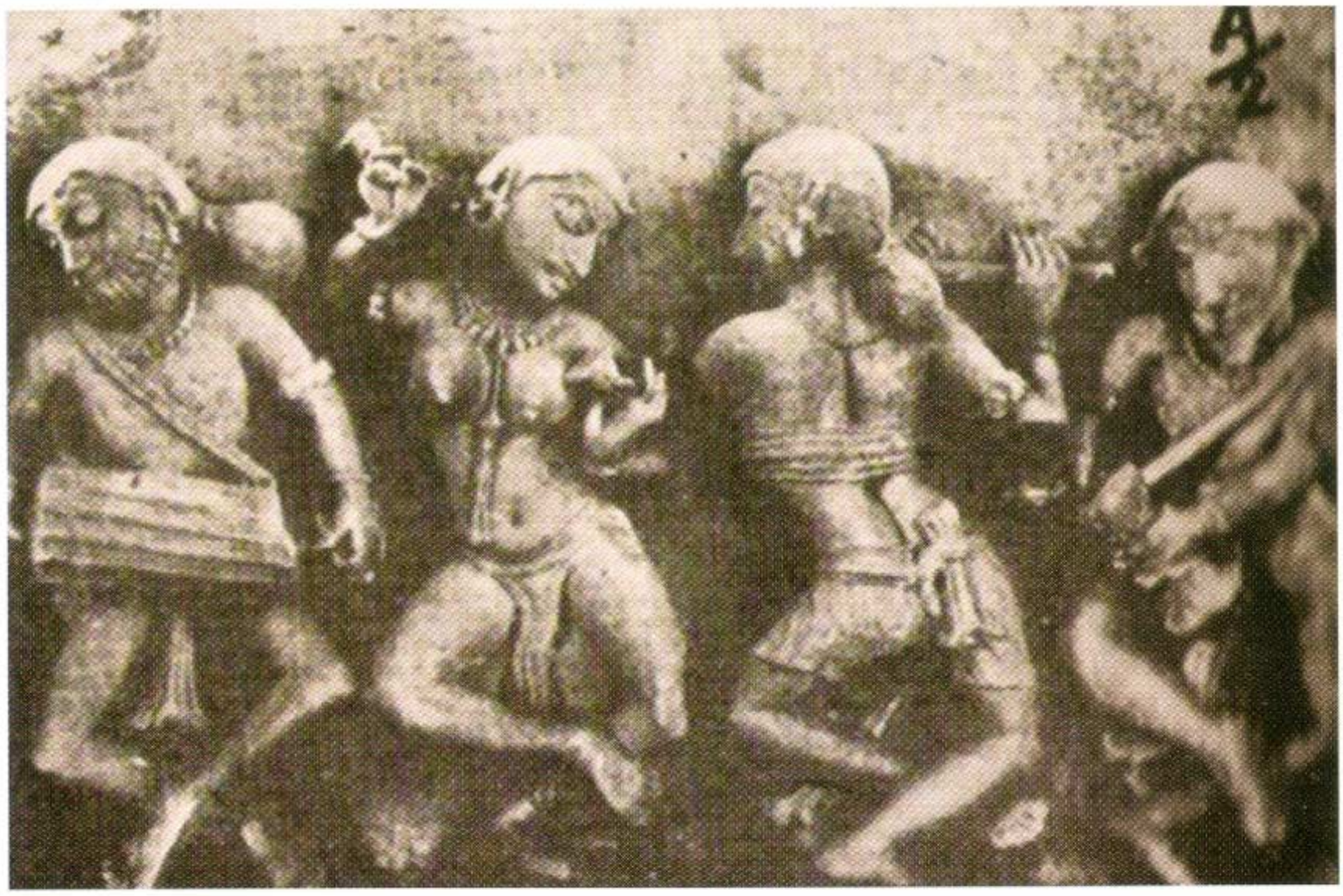

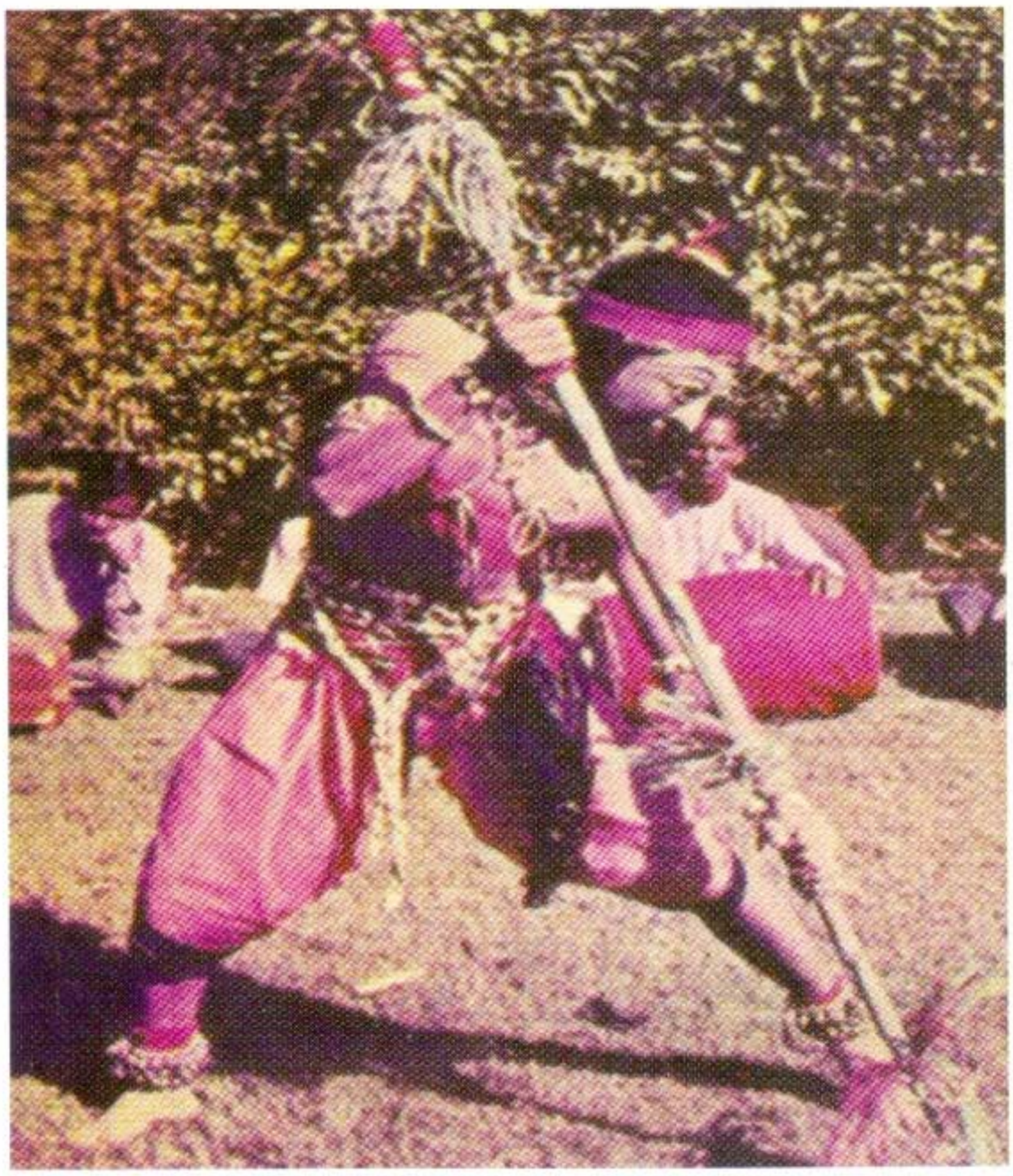

इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पूर्वक्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी ने ज्ञान–प्रवाह, वाराणसी के सहयोग से दिनांक 16 जनवरी से 15 फरवरी, 2014 तक उड़ीसा की सुप्रसिद्ध 'छाऊ' शैली पर आधारित कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में ज्ञान–प्रवाह द्वारा वाराणसी के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं अन्य संस्थाओं से अग्रसारित प्रतिभागियों के आवेदन प्राप्त कर उनमें से प्रशिक्षण प्राप्त 45 प्रशिक्षुओं को चुना गया। प्रशिक्षण के लिए सुप्रसिद्ध छाऊ प्रशिक्षक पं0 शशधर आचार्य को आमन्त्रित कर कठोर प्रशिक्षण दिया गया और इसी समूह से पुनः चुने गये प्रयोगदल द्वारा अष्टम शताब्दी के संस्कृत नाटककार भट्टनारायण द्वारा रचित नाटक "वेणीसंहारम्" का मूल संस्कृत में प्रयोग परिकल्पित किया गया है।

इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पूर्वक्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी एक ओर नाट्यशास्त्र की नेपाल वाचना के सम्पादन का कार्य सम्पन्न कर रहा है, दूसरी ओर नाट्यशास्त्र में निरुपित संस्कृत रंगपरम्परा के प्रयोगमूलक सातत्य को पहचानने का भी उपक्रम कर रहा है। यह सातत्य एक ओर केरल की सुप्रसिद्ध नाट्यशैली कुडियाट्टम तथा भारतीय शास्त्रीय नृत्यविधाओं में और दूसरी ओर पारंपरिक लोकरंग शैलियों में विद्यमान है। किन्तु किसी भी एक शैली में पूरे नाट्यशास्त्र के सातत्य को देख पाना कठिन है। अतः अलग–अलग शैलियों में वे कौन–कौन से तत्त्व विद्यमान हैं जो नाट्यशास्त्र की रंगपरम्परा से उद्भूत है, इसको भी पहचानने का उपक्रम किया जा रहा है। इसी क्रम में छाऊ शैली में विद्यमान चौक (स्थानकप्रकार), चाली एवं गति (चारी, गतिप्रचार, movement आदि), उफाली (उत्प्लवन), खेल (क्रीडा तथा युद्धकला के विविध रूप एवं मृगया), भंगिमा, हस्तमुद्रा (करकर्म) तथा पदचालन आदि तत्त्वों का प्रशिक्षण दिया गया है।

इस प्रशिक्षण का विधिवत् दस्तावेज़ीकरण मीडिया सेन्टर, इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के द्वारा किया जा रहा है और केन्द्र के दिल्ली स्थित संग्रहालय में सुरक्षित रखा जाएगा।

इस प्रकार उत्तर भारत में संस्कृत रंगपरंपरा के पुनराविष्कार का यह उपक्रम इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली, ज्ञान–प्रवाह के सक्रिय सहयोग से वाराणसी में अग्रसर कर रहा है।